REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 6 | MARCH - 2019

विद्यार्थियों का हिन्दी का उच्चारण कैसे सुधरे ?

डॉ. उमा सैनी
सहायक प्रोफेसर, बुनियादी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय ,
आई.ए.एस.ई.(मानित) विश्वविद्यालय, गांधी विद्या मन्दिर, सरदारशहर.

प्रास्ताविक :

भाषा का अशुद्ध उच्चारण आज हर स्तर पर देखा जा रहा है चाहे प्राथमिक स्तर हो या विश्वविद्यालयी स्तर। प्रायः भाषा शिक्षक छात्रों/विद्यार्थियों के अशुद्ध उच्चारण के सुधार के विषय में चिन्तित दिखाई पड़ते हैं । उनकी शिकायतें होती है– क्या करें, छात्रों को कितनी ही बार बताते हैं पर वे शुद्ध उच्चारण कर ही नहीं पाते, कोई ऐसा उपाय है क्या जिससे छात्रों का उच्चारण सुधर जाए ?

इस अध्ययन में हम यह देखने का प्रयास कर रहे हैं कि उच्चारण सीखने के प्रसंग में क्या–क्या बातें आवश्यक हो सकती है। इसमें दो आवश्यक तत्व हैं जो कि उच्चरण अशुद्धता को दूर करने में काफी सहायक हो सकते हैं –

(1) अध्यापक/शिक्षक
(2) अभ्यास

इन दोनो तत्वों से उच्चारण अशुद्धता को दूर किया जा सकता है परन्तु पहले यह देखना अत्यावश्यक है कि उच्चारण की प्रकृति कैसी है? उच्चारण भाषा ध्वनियों का किया जाता है, अतः सर्वप्रथम हमें बालकों को उस भाषा की वे ध्वनियां सिखानी होगी जिनका कि शुद्ध उच्चारण हम करवाना चाहते हैं। भाषा ध्वनियों का समूह मात्र होती है। सभी भाषाओं की अलग–अलग ध्वनियां होती है। इन ध्वनियों का उच्चारण बालक जैसा श्रवण करते हैं वैसा ही उसका वाचन करते हैं तो इसकी शुद्धता की पूरी जिम्मेदारी शिक्षक पर ही होती है कि वे स्वयं ध्वनियों का शुद्ध उच्चारण करते हैं या नही । क्योंकि बालक सबसे ज्यादा शिक्षकों का ही अनुकरण करते हैं । यदि अध्यापक ही श, ष, स में भेद नहीं कर पाए तो छात्र कहाँ से कर पाऐंगे ?

ध्वनियां दो प्रकार की होती है : स्वर ध्वनियां तथा व्यंजन ध्वनियां । सर्वप्रथम इनका उच्चारण शुद्ध होना चाहिए । बहुत से शिक्षक स्वर उच्चारण सिखाते समय छोटी 'इ' बड़ी 'ई' ऐसा बोल कर छात्रों को सिखाते हैं, जबकि वे ऐसा करते समय 'इ' को 'ई' की तरह ही उच्चारित करते चलते हैं । इसी प्रकार 'उ–ऊ' 'ए–ऐ', ओ–औ का हाल है । अतः भाषा के उच्चारण को सिखाने में प्रथम आवश्यकता है– समुचित ध्वनि शिक्षण ।

कुछ ध्वनियां विदेशी भाषा की है जो बालक अक्सर अशुद्ध उच्चारित करते हैं। अगर ये ध्वनियां हिन्दी में आ गई है तो सर्वप्रथम अध्यापक इन्हे शुद्ध उच्चारित करें तभी बालक भी शुद्ध बोल पायेंगे । जैसे– ज, ज़, के उच्चारण में भेद है जिन्हें स्वयं शिक्षक को अच्छी प्रकार शुद्ध बोलकर सीख लेना चाहिए । इसी के साथ भाषा–ध्वनियों के लिखित रूप की भी समुचित पहचान

आवश्यक है। छात्र 'द्य' 'ज्ञ' 'क्ष' 'श्र' आदि संयुक्ताक्षरों को ठीक से पहचानें व फिर उन्हे शुद्ध रूप से उच्चारित करना भी सीखें।

भाषा–ध्वनियों के उच्चारण में वाक्–तंत्र के विभिन्न व्यंग काम में आते है। भाषा शिक्षक इसके ज्ञान को भली भांति जानकर बच्चों को भी इसे सिखायें जिससे बालक अशुद्ध उच्चारण करने से बचे ।

स्वरों के उच्चारण, अनुस्वार एवं विसर्ग के उच्चारणों को केवल सिद्धान्ततः बता देना छात्रों के लिए निरर्थक सा रहेगा । स्वयं शिक्षक का उच्चारण शुद्ध होना चाहिए । यदि अध्यापक स्वयं विशेष, क्षत्रिय, स्कूल, अनुसार, ऐच्छिक, कृष्ण आदि शब्दों का शुद्ध उच्चारण नहीं करता तो उस शिक्षक द्वारा पढ़ाए गए छात्र भी 'वीसेस' 'खत्रिय' 'इस्कूल' अनूशार, एच्छिक, क्रस्ण जैसे अशुद्ध उच्चारण करेंगे । यदि शिक्षक स्वयं इन स्वरों के बोलने में अन्तर नहीं कर पाएँ तो फिर वे अपने छात्रों से कैसे आशा कर सकते हैं कि वे शुद्ध उच्चारण कर पायेंगे ।

छात्रों का इसमें तनिक भी दोष नहीं है क्योंकि उनको जैसा सिखाया जायेगा वे वैसा ही सीखते जाऐंगे । दुर्भाग्यवश अशुद्ध उच्चारण की नींव प्राथमिक कक्षाओं में ही पड़ जाती है। बच्चों पर अगर अभी ध्यान दिया जाये तो भविष्य में सुधार हो सकता है। आरम्भिक कक्षाओं से ही शुद्ध उच्चारण के अभ्यास की नितान्त आवश्यकता है। परन्तु आगे के स्तरों पर भी सुधार की आशा या प्रयत्न छोड़ देना भाषा–शिक्षक के लिए किसी भी प्रकार उचित नहीं कहा जा सकता । अतः भाषा–शिक्षक की ओर से उच्चारण शुद्धि का प्रयत्न निरन्तर चलते रहना चाहिए ।

यदि किसी भी भाषा शिक्षक का स्वयं का उच्चारण ठीक नहीं है या किसी स्वर या व्यंजन का उच्चारण वह ठीक से नहीं कर पाता है तो उसे इस बात को स्वीकारना चाहिए तथा शुद्ध उच्चारण का प्रयास वरते रहना चाहिए । ऐसी परिस्थिति में श्रव्य–दृश्य साधनों का सहारा लिया जा सकता है। रेडियो व चित्रपट द्वारा शुद्ध उच्चारण सम्बन्धी पाठों का योजनाबद्ध रूप से आयोजन किया जा सकता है।

टेपरिकार्ड :– उच्चारण शुद्धि में इसका महत्वपूर्ण स्थान रहा है। अच्छे–अच्छे विद्वानों के भाषण, वक्तव्य, कथन, उच्चारण सम्बन्धी पाठ भी इनके द्वारा छात्रों के सम्मुख प्रस्तुत किए जा सकते हैं। जिन ध्वनियों के उच्चारण में कठिनाई महसूस होती है उन ध्वनियों को (टेप) पर अंकित कर कक्षा कक्ष में छात्रों के सम्मुख प्रस्तुत कर उनका बार–बार अनुकरण अभ्यास करवाया जाना चाहिए ।

भाषा–प्रयोगशालाएँ :– यह ऐसा स्थान है जहाँ उच्चारण शुद्धि में काफी सहायता मिलती है। इसके द्वारा शिक्षक एवं छात्र दोनों को लाभ हो सकता है पर ये विभिन्न शालाओं में न तो व्यापक रूप से आज उपलब्ध है और न ही निकट भविष्य में ऐसी आशा की जा सकती है।

कुछ शिक्षण विधियों के द्वारा भी बच्चों को शुद्ध उच्चारण करना सिखाया जा सकता है :–

1. वर्ण विधियां अक्षर बोध विधि :– यह वाचन शिक्षण की सबसे प्राचीन विधि है । इससे बालक को वर्णमाला के अक्षरों को जोड़कर शब्द बनाना और उन अलग–अलग शब्दों को मिलाकर उनका उच्चारण करना सिखाया जाता है, जैसे– र + आ + म = राम आदि ।
2. देखो और कहो विधि अथवा चित्र आधारित ध्वनि संयोग विधि..... इस विधि में पहले 'शब्द' का ज्ञान कराते हैं और फिर 'अखर' ज्ञान । इस विधि में बालक को चित्र के सहारे से पहले शब्द का उच्चारण कराया जाता है और फिर शब्द जिन अक्षरों के मेल से बना है, उन अक्षरों की जानकारी कराते हैं, जैसे 'अ' अक्षर का ज्ञान कराने के लिए 'अनार' का चित्र बनाकर सिखाया जाता है।
3. अनुकरण विधि :– शिक्षक एक–एक ध्वनि का या अक्षर शब्द का उच्चारण करता है बालक उसका अनुकरण करते हैं।

4. ध्वनि साम्य विधि :– इस विधि द्वारा समान ध्वनि वाले शब्दों का ज्ञान कराया जाता है। इन शब्दों के आरम्भ, मध्य और अन्त की ध्वनि एक सी होती है । जैसे घर–झर, कब–जब, मोहन–सोहन आदि ।
5. वाक्य शिक्षण विधि – इसमें बालक दो या तीन शब्दों के वाक्यों का उच्चारण करना सीखते हैं ।
6. साहचर्य विधि – इस विधि में शब्द व उनसे संबंधित चित्रों के कार्ड होते हैं जिन्हें मिलाकर रख दिया जाता है तथा उन कार्डों में से बालक संबंधित कार्ड को जो उसे कहा जाता है, ढूंढ़ कर निकालता है ।
7. कहानी विधि – इस विधि में बालकों को छोटे–छोटे वाक्यों के आधार पर तथा चित्रों की सहायता लेते हुए लघु कहानियां सुनाई जाती है जिससे छात्र अनेक शब्दों का उच्चारण करना सीख जाते हैं ।

शिक्षक कक्षा में अपने छात्रों को उच्चारण के अधिकाधिक अवसर प्रदान करें । साथ ही उच्चारण में कमजोर छात्रों को और भी अधिक अवसर दें । हां, यह अवश्य ध्यान रखना होगा कि छात्रों पर इसका प्रतिकूल मनोवैज्ञानिक प्रभाव न पड़े । कक्षा में अधिक अवसर प्रदान करना ही वर्तमान में उच्चारण सुधार का सबसे अच्छा साधन है । श्यामपट्ट की सहायता से भी शब्दों का उच्चारण शुद्ध करवाना चाहिए । उच्चारण शुद्धि की दृष्टि से कक्षा में सामान्यतया भी शुद्ध हिन्दी से बातचीत की जावे, इससे भी बड़ी मदद मिल सकती है ।

उच्चारण के सुधार में निम्नलिखित बातें भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकती हैं :–

- पाठ्यपुस्तकों व सहायक पुस्तकों का कक्षा में छात्रों द्वारा वाचन करवाकर । कई शिक्षक स्वयं पाठ का वाचन कर पाठ को खत्म कर देते हैं । जिससें छात्र स्वयं उच्चारण नहीं कर पाते तथा शुद्ध उच्चारण से वंचित रह जाते हैं ।
- कक्षा में वाचन के उक्त अवसरों के अलावा कक्षा को एक सभा का सा रूप देकर छात्रों को उसे सम्बोधित करने के लिए अतिरिक्त अवसर दिये जा सकते हैं ।
- छात्रों के उच्चारण पर क्षेत्रीय भाषा का भी बहुत प्रभाव पड़ता है । शिक्षक ऐसी अशुद्धियों का कक्षा कक्ष में ध्यान रख कर उसे सुधार सकते हैं ।
- शब्दों के यथावश्यक उच्चारणाभ्यास के प्रसंग में उन्हें अक्षरों में विभाजित कर उनके ठीक ठीक बोलने का अभ्यास करवाना चाहिए । कभी कभी अक्षर–विभाजन का ज्ञान न होने से भी अशुद्ध उच्चारण की स्थिति बन जाती है । यथा 'उपन्यास' का अक्षर–विभाजन इस प्रकार होगाः– उ–पन्–न्यास, न कि उप–न्यास ।
- उच्चारण में बलाघात भी महत्वपूर्ण है । बोलने में प्रत्येक शब्द पर समग्रतया एक सा बल नहीं दिया जाता । जिस अक्षर पर बल देना है उसी पर दिया जाकर शुद्ध वाक्य का उच्चारण किया जा सकता ।
- विराम चिन्हों का उचित प्रयोग भी समुचित समस्त वाक्योच्चारण में बहुत सहायक होता है। इन चिह्नों का ठीक अभ्यास न होने से भी कई बार समग्रोच्चारण के सही रूप तथा सही भाव – संकेतों में बाधा आ जाती है । जैसे :–

- वह आ गया ।
- वह आ गया ?
- वह आ गया !

विभिन्न विराम चिन्हों के आधार पर ही, पढ़ते समय इन्हें विभिन्न उच्चारण क्रम से पढ़ा और तदनुसार उनके सम्बद्ध अर्थ को समझा जा सकेगा ।

- कविता वाचन द्वारा भी शुद्ध उच्चारण सिखाया जा सकता है ।

- संधि का ज्ञान भी उच्चारणाभ्यास में सहायक होता है । बालकों को शब्दों की संधि का ज्ञान न होने से वे उच्चारण में भी अशुद्धि करक देते हैं । जैसे :–

  ज्ञानोपार्जन – शुद्ध उच्चारण – ज्ञान+उपार्जन
  अशुद्ध उच्चारण– ज्ञानोपा+र्जन

- इसी प्रकार उपसर्ग व प्रत्ययों का ज्ञान भी ठीक ठीक उच्चारण में सहायक होता है जैसे :–
  'सुपरिचित' शब्द का उच्चारण
  शुद्ध उच्चारण –'सु+परिचित'

- 'नाटक एवं संवाद' में छात्रों की गति की उच्चारण–शुद्धि का उपाय है। नाटक में पात्रानुकूल भाषा बोलनी पड़ती है और दर्शकों के समक्ष उनके भावानुरूप भाषा का ही उपयोग प्रभावकारी हो सकता है। इस प्रकार के प्रसंग बोलने व वाचन करने के अवसर शुद्ध उच्चारण में सहायक सिद्ध होते हैं ।

- धारा प्रवाह भाषण का प्रयोग भी उच्चारण–शुद्धि में सहायक होता है । इसके लिए जब तब छात्रों को अपने किसी भी मनवांच्छित विषय पर बोलने के लिए कहना चाहिए । इससे भाषा के स्वच्छंद और अनवरत प्रयोग में उचित गति के साथ साथ शुद्ध उच्चारण के अभ्यास को भी एक अच्छा और सुदृढ़ आधार प्राप्त होता चलता है ।

निष्कर्ष :–

प्रस्तुत समस्या अध्ययन के ये वे कुछ पक्ष हैं, जिन पर दृष्टि रखना तथा यथा समय उनके लिए उचित समायोजन कर शिक्षक अपने छात्रों के शुद्ध और प्रभावी उच्चारणाभ्यास मे सहायक हो सकता है ।

यदि भाषा शिक्षक स्वयं अध्ययनशील और विचारशील है, यदि वह छात्रों की उच्चारण सम्बन्धी अशुद्धियों का पूरा लेखा–जोखा रखता है, यदि वह अपना स्वयं का उच्चारण शुद्ध रखने का प्रयत्न करता है और यथास्थिति तथा यथावश्यक रूप से उच्चारण शुद्धि के अन्यान्य उपाय भी काम में लाने के लिए तत्पर रहता है तो कोई कारण नहीं कि उसके छात्रों के उच्चारण में वांच्छित सुधार क्यों न हो?

अध्ययन की शुरूआत में बताया गया है कि उच्चारण की शुद्धि में 'अभ्यास' एवं 'अध्यापक' की भूमिका का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है । कार्य कठिन है और वह निरन्तर परिश्रम, सावधानी एवं मनोनयन की अपेक्षा करता है पर जो शिक्षक भाषा–शिक्षक बने हैं, वे भाषा के शुद्ध प्रयोग के समुचित शिक्षण विषयक गुरूतर भोर से मुक्त कैसे हो सकते हैं । यह भार न होकर एक पवित्र कर्त्तव्य है जिसे भाषा शिक्षक को पूरा करना ही होगा । इस कर्त्तव्य को पूरा न कर कोई भी भाषा–शिक्षक अपने आपको अपने कर्त्तव्य से च्युत ही करता है ।

सन्दर्भ ग्रंथ :–

1. 'गौड़, राधेश्याम शर्मा, ''हिन्दी शिक्षण'', विषय वस्तु एवं शिक्षण विधियां, अरिहंत शिक्षा प्रकाशन, 50, प्रताप नगर–II टोंक फाटक, जयपुर ।

2. व्यास–डॉ.सुशील कुमार, आचार्य–पंकज कुमार, ''हिन्दी शिक्षण'', अल्का पब्लिकेशंस, पुरानी मण्डी, अजमेर ।
3. 'भाषा में सुधार की पहल करें युवा' https://m-hindi.webdunia.com
4. हम अपनी हिन्दी भाषा में कैसे सुधार करें ? https.//hi.quora.com

LBP PUBLICATION